विश्व न्याय मन्दिर

20 अक्टूबर, 2008

विश्व के बहाईयों को

परमप्रिय मित्रगण,

आज, बाब की जन्म-जयंती की वर्षगाँठ, पाँच सालों के उस उत्साह भरे कार्यक्रम का मध्य बिंदु है जो बहाई जगत को रिज़वान 2011 तक व्यस्त रखेगा। हम बहाउल्लाह के प्रति विनम्र आभार प्रकट करते हुए नतमस्तक हैं कि इतनी मेहनत और त्याग की भावना के साथ शिक्षण कार्य में अग्रणी भूमिका निबाह रहे लोगों को उन्होंने अपनी कृपा और सम्पुष्टि प्रदान की है। कुछ महीने पहले समाप्त हुए दसवें अन्तर्राष्ट्रीय बहाई अधिवेशन के बाद से पाँच वर्षीय योजना के परिचालन को संचालित करने वाले ढाँचे के प्रभाव के प्रति जागरूकता बढ़ी है, क्योंकि प्रतिनिधियों द्वारा प्राप्त अन्तर्दृष्टि को बहाई समुदाय के बीच बड़े पैमाने पर बा ंटा गया है। पूरी दुनिया में अनेक क्लस्टर सिलसिलेवार प्रसार कार्य के लिये चुने जा रहे हैं और हम उम्मीद करते हैं कि अगले साल रिज़वान तक सघन विकास कार्यक्रमों की एक लहर देखने को मिलेगी।

इन तथा सभी क्लस्टरों में मित्रों के सामने जो चुनौती है वह प्रकृति में दोहरी बनी हुई है। समाज के ग्रहणशील इलाकों और प्रभुधर्म के संदेश के प्रति अनुकूल उत्तर देने वालों की पहचान करने के तरीकों को सीखते हुए -- एक ऐसी अभिलाषा जिसे पूरा करना आमतौर पर मुश्किल नहीं -- वे व्यावहारिक रूप से यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि किस प्रकार विकास के एक स्वस्थ और अनुकरणीय पैटर्न के विभिन्न तत्वों को, खासकर मानव संसाधनों के विकास को, एक-दूसरे के साथ जोड़कर सुव्यवस्थित रखा जाये। यह देखकर कितनी खुशी होती है कि किसी क्लस्टर में मित्रगण ज ैसे ही इस दोहरी चुनौती का हल ढूंढ ़ना शुरू करते हैं वैसे ही वहाँ प्रगति पा ली जाती है; विकास के सघन कार्यक्रम को शुरू करने के लक्ष्य आसानी से पाने योग्य बन जाते हैं।

तब कोई आश्चर्य नहीं होता जब हम लगातार सुदृढ़ हो रहे समुदाय की गति, पतन की ओर जा रही पुरानी विश्व व्यवस्था जैसी ही है। वास्तव में मित्रों को सचेत रहना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि बहाई समुदाय की क्षमता का विकास भ्रमित मानव की ग्रहणशीलता के कदम-से-कदम मिलाकर चलने में अक्षम हो जाये। देखें, जब हमने अपने रिज़वान संदेश में चेतावनी दी थी तब से अब तक के अल्पकाल में ही जिस आर्थिक ढाँचे को अभेद्य माना जा रहा था वह किस

प्रकार चरमरा गया है और विश्व के नेताओं ने अस्थायी समाधान से अधिक कुछ कर पाने में अपनी असमर्थता दिखलाई है, एक ऐसी असफलता जिसे वे लगातार स्वीकार रहे हैं। कितनी भी तेजी से कोई भी उपाय किया गया, विश्वास लड़खड़ाता गया और सुरक्षा की भावना समाप्त होती गई। निश्चित रूप से ऐसी घटनाओं ने हर देश में अनुयायियों को वर्तमान व्यवस्था की चिन्ताजनक स्थिति पर विचार करने के लिये प्रेरित किया है और उनके इस विश्वास को गहरा किया है कि भौतिक और आध्यात्मिक सभ्यता का विकास साथ-साथ होना चाहिये।

इन्हीं विचारों के साथ हम अक्सर बहाउल्लाह की ओर उन्मुख होते हैं और उनसे याचना करते हैं कि अपनी अचूक कृपा से अपने अनुयायियों को सशक्त बनाएँ। ऐसे क्षणों में हम उनसे प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्माओं को ज्ञान और आस्था के प्रकाश से आलोकित करें। प्रभुधर्म के प्रसार के लिये जिस प्रणाली पर वे काम कर रहे हैं उस प्रणाली में अन्तर्निहित शक्ति को कम कर नहीं आंकें और न ही जिस वैश्विक अभियान को उन्होंने शुरू किया है उसके सच्चे उद्देश्य को गलत समझने की भूल करें। सीखने के जिस रास्ते पर वे चल पड़े हैं उससे भटकें नहीं और न ही भ्रमित समाज की क्षणिक चकाचौंध से विचलित हों। सेवा की क्षमता के विकास के लिये प्रणालीबद्ध तरीके से छोटे-छोटे समूहों में 'रचनात्मक शब्द' के अध्ययन को बढ़ावा देने वाली जिस संस्कृति ने अभी-अभी समुदाय में अपनी जड़ें जमाई हैं उसके मूल्य को समझने में उन्हें विफल न होने दें। उन्हें दुनिया के बच्चों की जरुरतों की ओर रुख करने की अनिवार्यता को कभी भी भूलने न दें और उन्हें ऐसे पाठों से सबलित करें जो उनकी आध्यात्मिक क्षमता का विकास कर पाएँ और एक उत्तम तथा उच्च चरित्र की नींव उनमें डाली जा सके। युवाओं को उनकी किशोरावस्था में ही एक मजबूत नैतिक पहचान देने के उनके प्रयासों के पूरे महत्व को उन्हें महसूस करने दें ताकि वे अपने समुदायों के कल्याण में योगदान दे सकें और उन्हें निरन्तर प्रणालीबद्ध तरीके से काम कर यह सीखने पर प्रसन्न होने दें कि किस प्रकार उस लयबद्ध विकास को स्थापित किया जा सकता है जो प्रसार, सुगठन, समीक्षा और योजना के आवश्यक तत्वों पर अपेक्षित ध्यान देता है। ईश्वर करे वे सभी निष्ठा और ईमानदारी के आभूषण से विभूषित हों और योजना की सतत् प्रतिध्वनित होने वाली सफलता सुनिश्चित करने के लिये जितने भी त्याग की जरुरत हो उतना त्याग करने का साहस उन्हें मिले। अपने आचरण की शुद्धता, अपने सह-मानवों के प्रति प्रेम की वास्तविकता और दुनिया के लोगों की सेवा करने की उत्सुकता के माध्यम से बहाउल्लाह द्वारा घोषित इस सत्य की रक्षा करें कि मानव एक है। वे ऐसी मित्रता बनाने के अपने प्रयासों में निरन्तर लगे रहें जो प्रचलित सामाजिक व्यवधानों की परवाह न करें और बिना रूके, बिना थके ईश्वर के प्रेम के बंधन में लोगों को बांधने के अपने प्रयास में लगे रहें। वे अपने उद्देश्य के गहरे प्रभाव को समझ पाएँ, यह हमारी उत्कट आकांक्षा है। वे अपने महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को पाने में चूक न करें, चाहे उनके इर्द-गिर्द की दुनिया को चारों ओर से घेर लेने वाले संकट कितना भी गहरा क्यों न जाएँ। पवित्र समाधि पर हमारी यही विनीत प्रार्थना है।

मित्रों को एक साथ मिलने के अवसर देने के उद्देश्य से और अब तक की प्राप्त उपलब्धियों पर खुशी मनाने तथा वर्तमान जरुरतों पर विचार विमर्श करने के लिये हम क्षेत्रीय सम्मेलनों की एक श्रृंखला की घोषणा करते हैं, जिनकी संख्या इकतालीस है और जो इन शहरों में नवम्बर तथा मार्च के दौरान आयोजित किये जाएँगे: आबिदजान, एक्रा, अलमती, एंटोफगास्ता, अटलांटा, औक लैण्ड, बाकु, बेंगलुरू, बांगुई, बट्टामबंग, बोलन्ना, बुकावु, शिकागो, दल्लास, फ्रैंकफर्ट, गुआसमूहजारा, इस्ताम्बुल, जौहेंसबर्ग, कीव, कोलकाता, क्वालालम्पूर, कुचिंग, लेई, लंदन, लॉस एंजल्स, लुबुम्बासी, लुसाका, मैड्रिड, मानागुआ, मनीला, नाकुरू, नई दिल्ली, पोर्टलैण्ड, क्विटो, सावपालो, स्टैम्फोर्ड, सिडनी, टोंरटो, उलानबातार, वौकुवट, योंदे। इनमें से प्रत्येक सम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के दो सदस्य हमारे प्रतिनिधि के रूप में भेजे जाएँगे। मेजबान देशों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं को लोगों के भाग लेने के सम्बन्ध में अलग से जानकारी उपलब्ध कराई जायेगी। जो अनुयायी योजना के विभिन्न प्रावधानों को पूरा करने में पूरी तरह से व्यस्त हैं तथा उनसे भी जो अभी तक अपनी इस इच्छा को पूरा करने में विभिन्न परिस्थितियों के कारण असमर्थ रहे हैं, हम प्रार्थना करते हैं कि इस अवसर का लाभ उठाएँ और अपने क्षेत्र में होने वाले सम्मेलन में भाग लें।

-विश्व न्याय मन्दिर